

सृष्टि में मनुष्य सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है, उसे विशेषाधिकार प्राप्त है शक्ति के विस्तार का, यह शक्ति विस्तार ही उसे साधारण से असाधारण बन सकता है। पर शक्ति अपने आप नहीं बढ़ती। उसे जाग्रत करना पड़ता है और **जिस कर्म से शक्ति का जागरण होता है, वही क्रिया कहलाता है।**

आप सभी जीवन में सफलता चाहते हो, उन्नति चाहते हो, सम्मान चाहते हो, आध्यात्मिक प्रगति चाहते हो, पर सोचों, क्या यह सब बिना अभ्यास के संभव है? इस अभ्यास का नाम ही क्रिया है और यह क्रिया ही साधना है।

गुरु तुम्हें ज्ञान दे सकते हैं, दिशा दे सकते हैं, शक्ति दे सकते हैं, लेकिन चलना तुम्हें ही होगा। ज्ञान और बुद्धि तभी सिद्ध होते हैं जब उनके साथ निरंतर अभ्यास-क्रिया-साधना जुड़ी हो।

इसलिए जैसे नदी बहती रहती है, वैसे ही साधना प्रवाह निरन्तर रहना चाहिए। प्रवाह रुक गया तो शक्ति रुक जाएगी। शक्ति रुक गई तो कामना बंधन बन जाएगी और बंधन और अधिक मजबूत होता जाएगा, तब तनाव हर समय बना रहेगा।

आज इस सत्य को स्वीकार कर लो कि तुम्हें अपनी नाव स्वयं चलानी है। गुरु तुम्हें दिशा देंगे, शक्ति देंगे, साहस देंगे, लेकिन पतवार तुम्हें पकड़नी होगी, यही स्वाभिमानी है।

जब गुरु के ज्ञान को मनन में, मनन को चिंतन में, और चिंतन को क्रिया में बदल दोगे, तब देखना तुम्हारी कामनाएं भी पूर्ण होंगी और तुम्हारे बंधन भी कटने लगेंगे।

यही गुरु कृपा है। यही शक्ति का प्रवाह है। यही साधना का वास्तविक मार्ग है। गुरु प्रेरणा प्रदान करते है, गुरु की प्ररेणा ही समस्त शक्तियों का सार है। यह प्रेरणा शक्ति सबसे बड़ी है, जिसके आगमन से ही जीवन में इच्छा, ज्ञान और क्रिया का आगमन होता है और प्रेरणा आप उसी से प्राप्त करते हो जिसे आपने हृदय में स्थान दिया है।

ईश्वर गुरु रूप में बार-बार आपको प्रेरणा भेजता है। पर आप संसार चक्र में सद्गुरु की प्रेरणा को सुनते ही नहीं हो। जिन्दगी जीते नहीं, काटते हो और काटते-काटते खुद कट जाते हो। गुरु आपको निरन्तर अभ्यास-साधना के माध्यम से शक्ति जागरण हेतु प्रेरित करते है। आश्विन नवरात्रि पर सद्गुरुदेव प्रतिवर्ष शक्ति जागरण हेतु प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री शास्त्रों विधान सहित आपके द्वार पर भेजते है।

आश्विन नवरात्रि में सद्गरुदेव अपनी प्रेरणा शक्ति के माध्यम से साधक की इच्छा, ज्ञान और क्रिया शक्ति को समृद्ध करते है। जिससे वर्ष भर आप शक्ति से आपूरित रहे। आद्या शक्ति जगदम्बा आधार शक्ति है, मूल शक्ति है, जड़ है और मनुष्य जीवन में यह जितनी मजबूत, गहरी होती है उतना ही जीवन बाधाओं, समस्याओं, परेशानियों, विपदाओं में अडिग होकर नवनिर्माण करने, स्वयं का विस्तार करने में सक्षम होता है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से शक्ति की चैतन्यता प्रभावित करती ही है। उच्च और सकारात्मक ऊर्जा प्रवाह से - ✲ व्यापार एवं व्यवसाय में उन्नति तथा नए अवसरों की प्राप्ति होती है। ✲ बुद्धि, विवेक और निर्णय क्षमता की प्राप्ति से व्यापारिक, सामाजिक और विभिन्न प्रतिस्पर्धा में सफलता प्राप्त होती है। ✲ प्रतिद्वंद्वियों एवं विरोधी परिस्थितियों के विरुद्ध आत्मबल की प्राप्ति होती है। ✲ राजकीय एवं प्रशासनिक कार्यों की पूर्णता तथा कार्यों को सुचारू रूप से करने का सार्मथ्य प्राप्त होती है। ✲ नौकरी, पदोन्नति, करियर विकास हेतु नेतृत्व क्षमता प्राप्त होती है। ✲ अधूरे, रुके कार्यों और संकल्पों को पूर्ण संकल्प एवं कर्मबल प्राप्त होता है। ✲ शारीरिक, मानसिक और

भावनात्मक संतुलन बनाए रखने की शक्ति प्राप्त होती है। * निराशा, भय, आलस्य, भ्रम और आत्मविश्वास की कमी पर विजय प्राप्त करने की क्षमता प्राप्त होती है। * स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, जीवन में अनुशासन विकसित होता है।

शक्ति ही जीवन की गति है, सम्पूर्ण सृष्टि शक्ति पर ही आधारित है। जहां शक्ति है, वहीं गति है; जहां गति है, वहीं प्रगति है। शक्ति के बिना न शरीर विशेष कार्य कर सकता है, न मन विचार कर सकता है, न बुद्धि निर्णय ले सकती है और न ही कोई संकल्प पूर्ण हो सकता है।

शक्ति सिद्धि के मार्ग में सबसे बड़ा शत्रु निराशा और आलस्य है। निराशा अंधकार है और आलस्य उस अंधकार का द्वार। जो हर कार्य कल पर टाल देता है, उसकी न कामना पूरी होती है और न उसका कोई बंधन कटता है।

इस आश्विन नवरात्रि आप सभी निखिल साधकों को शक्ति का संवर्धन करना है, स्वयं को शक्ति से परिपूर्ण करना है इस हेतु नवरात्रि के नौ दिन शास्त्रों विधानानुसार प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री से साधना-पूजन-मंत्र जप सम्पन्न करना है। सद्गुरुदेव आपको प्रेरणा के स्वरूप में आपके घर के द्वार तक प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री पूजन विधान सहित पहुंचा रहे है। आपको तो बस गुरु आज्ञा से पूजन-साधना-मंत्र जप अवश्य ही सम्पन्न करना है।

आपकी इच्छा, ज्ञान और क्रिया शक्ति स्वतः ही आपका मार्गदर्शन करेगी एवं आप अपनी कामनाओं, इच्छाओं को पूर्ण करने में सफल होंगे।

आद्याशक्ति जगदम्बा सायुज्य नवार्ण शक्ति नवरात्रि पूजन

आश्विन नवरात्रि - 11 अक्टूबर 2026 से 20 अक्टूबर 2026
घट स्थापन प्रातः - 06:19 से 10:12 तक

आश्विन नवरात्रि में आपके घर में आद्याशक्ति जगदम्बा सायुज्य नवार्ण शक्ति का पूजन अवश्य ही होना चाहिए। संसार के सारे काम से महत्वपूर्ण नवरात्रि में आद्याशक्ति जगदम्बा सायुज्य नवार्ण शक्ति की साधना है।

इस हेतु निखिल मंत्र विज्ञान कार्यालय द्वारा प्रत्येक पत्रिका सदस्य को "आद्याशक्ति जगदम्बा सायुज्य नवार्ण शक्ति नवरात्रि पूजन-साधना" पैकेट 550/- रुपये की स्पीड पोस्ट से भेजा जायेगा। गुरुदेव की आज्ञानुसार 07 सितम्बर 2026 से यह पैकेट भेजना प्रारम्भ कर दिया जायेगा।

साधना पैकेट भेजने की जानकारी आपको आपके मोबाईल पर भेज दी जायेगी। इस सम्बन्ध में आप कार्यालय को 9799988915, 9799988930, 9799988937, 9799988938 पर फोन कर एवं वॉटसअप - 9602334847 पर मैसेज कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

पूजन सामग्री पोस्ट द्वारा भेजते ही आपको एक 13 अंकों का पोस्टल कोड कार्यालय में रजिस्टर्ड आपके मोबाईल पर भेज दिया जायेगा। जिन गुरु भाईयों के मोबाईल पर 22 सितम्बर 2026 तक इस प्रकार की कोई सूचना प्राप्त नहीं हो तो वे तुरन्त निखिल मंत्र विज्ञान कार्यालय जोधपुर से सम्पर्क करें और अपनी सामग्री प्राप्त करने का अनुरोध करें।

नवरात्रि में नवार्ण साधना सम्पन्न कर, सद्गुरुदेव से शक्तिपात नवार्ण दीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिये।